दादा भगवान परिवार का

अक्टूबर २०२४

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

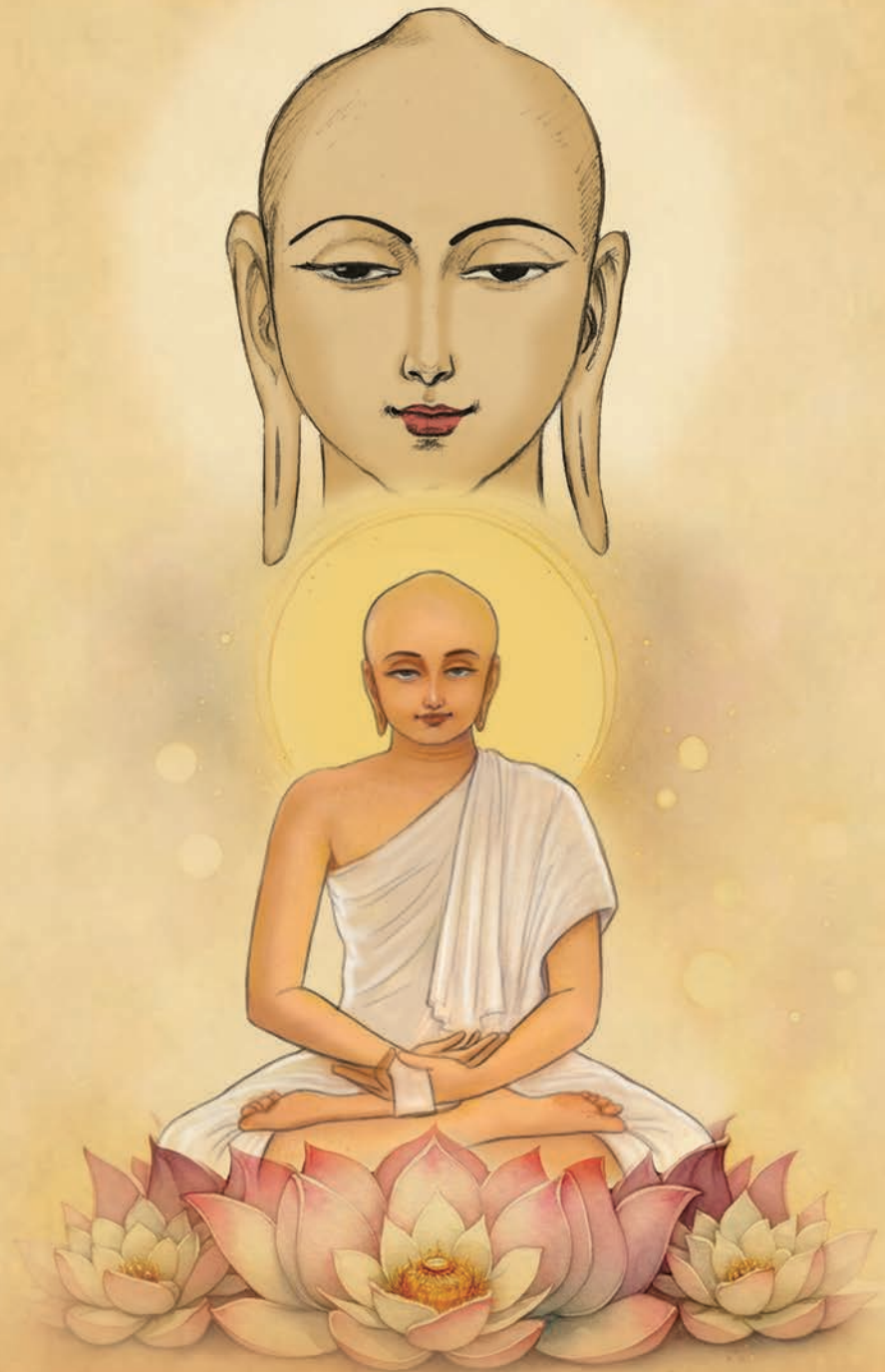

संपादकीय

बालमित्रों,

भगवान महावीर के चरणों में उनका जीवन समर्पित था। उनकी नम्रता और सरलता के किस्से पढ़कर आज भी लोगों के जीवन में परिवर्तन आ जाता है। सबका मंगल करने की भावना उनके रोम-रोम में सदा बहती थी। उनका नाम लेने से ही सबके संकट दूर हो जाते और सबका कल्याण हो जाता था। भगवान महावीर के प्रथम गणधर होने के बावजूद उन्हें अपने ज्ञान या महानता का थोड़ा भी अभिमान नहीं था।

वे कौन थे? चलो, इस अंक में हम महावीर स्वामी के प्रथम गणधर यानी कि गौतम स्वामी का यथार्थ परिचय प्राप्त करें। उनका स्मरण करें और दिल से ऐसी भावना करें कि उनके जैसी स्वामी भक्ति, विनय, सरलता और नम्रता हमें भी प्राप्त हो।

- डिम्पलभाई मेहता

शब्द का अर्थ : गणधर - प्रधान शिष्य

वर्ष : १२ अंक: ०७
अखंड क्रमांक: १३९
अक्टूबर २०२४

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhatral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

© 2024, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

गौतम स्वामी की भगवान महावीर के प्रति अनन्य भक्ति थी। वे महावीर भगवान के प्रथम शिष्य थे। उन्हें भगवान महावीर के प्रति अत्यंत राग था, जिसे प्रशस्त राग कहा जाता है। प्रशस्त राग यानी संसार की किसी भी चीज़ पर राग नहीं होता, सिर्फ भगवान पर ही होता है।

गौतम स्वामी के लिए तो भगवान महावीर प्रत्यक्ष हाज़िर थे। इसलिए गौतम स्वामी को भगवान के देह पर, उनकी वाणी पर अत्यंत राग था। प्रशस्त राग को बहुत उच्च माना जाता है। किसी विरले को ही प्राप्त होता है। गौतम स्वामी को साक्षात् तीर्थंकर भगवान पर प्रशस्त राग था। इसलिए भगवान को उन्हें मोक्ष में ले जाने के सिवाय कोई चारा ही नहीं था।

गौतम स्वामी का भगवान के प्रति प्रशस्त राग और उनके प्रति विनय सराहनीय हैं। प्रशस्त राग का फायदा यह है कि संसार में जहाँ भी राग फैला हो वहाँ से हटकर भगवान में केन्द्रित हो जाता है। प्रशस्त राग उसे कहा जाता है कि जिन पर प्रशस्त राग हो उनसे कोई अपेक्षा नहीं होती, उनका एक भी दोष नहीं दिखाई देता।

गौतम स्वामी का इतना पावर था कि वे किसी को उपदेश देते तो तुरंत ही सामने वाले में बदलाव आ जाता था (उपदेश ऐसा काम करता कि तुरंत ही रिज़ल्ट मिलता) और उनके शिष्यों को केवलज्ञान भी हो जाता, लेकिन वे स्वयं केवलज्ञान से वंचित थे।

तो क्या गौतम स्वामी हमेशा के लिए केवलज्ञान से वंचित रहे होंगे? क्या उन्हें केवलज्ञान हुआ? कब और कैसे? चलो, गौतम स्वामी के जीवन की कथा जानें।

गौतम स्वामी का परिचय

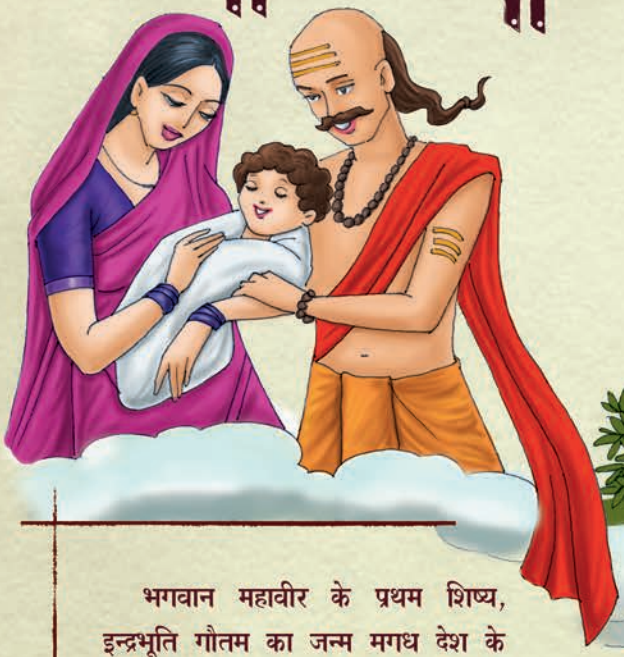

भगवान महावीर के प्रथम शिष्य, इन्द्रभूति गौतम का जन्म मगध देश के गोब्बर नामक गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम पृथ्वी और पिता का नाम वसुभूति था। उनके दो भाई थे, अग्निभूति और वायुभूति। पिता वसुभूति ने तीनों बच्चों को बचपन से ही वेदों का ज्ञान देना शुरू कर दिया था।

युवावस्था में तीनों भाई इतने विद्वान हो गए कि उन्हें प्रत्येक धार्मिक कार्य और यज्ञ में आदरपूर्वक निमंत्रण मिलने लगा। देखते ही देखते तीनों भाईयों के ज्ञान की चर्चा देश भर में होने लगी। इन तीनों पंडितों के चरणों में रहकर सैंकड़ों विद्यार्थी वेदों और यज्ञकर्म का ज्ञान प्राप्त करते थे।

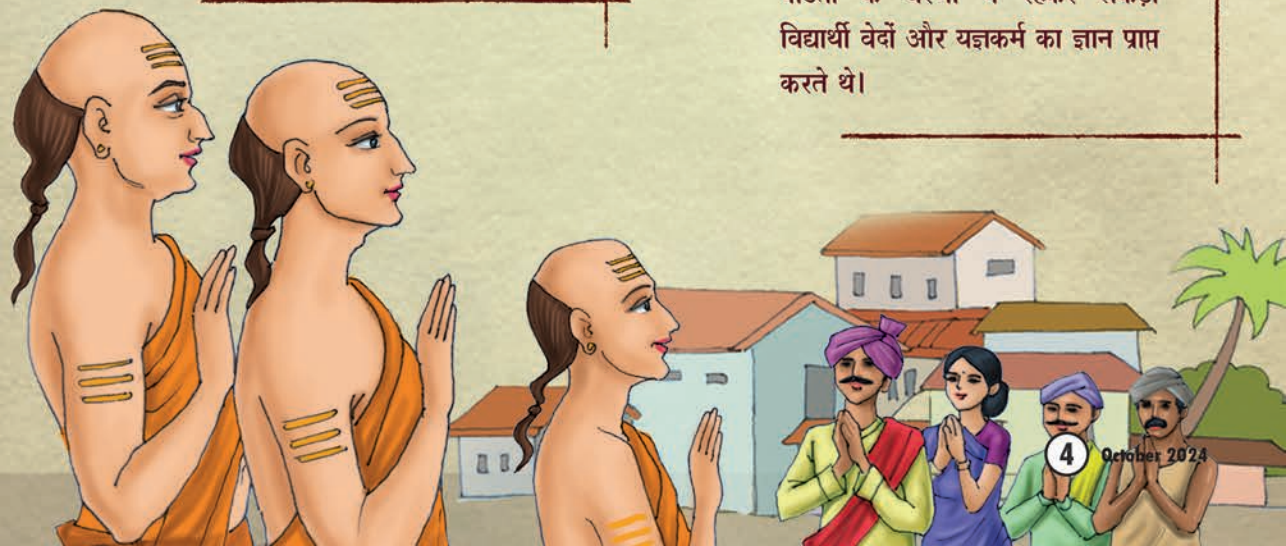

ऐसे टूटा अभिमान

मध्यमा नगरी नामक पवित्र भूमि पर सोमिलाचार्य नाम के एक पंडित रहते थे। एक दिन पंडित सोमिलाचार्य ने नगरी में एक भव्य यज्ञ का आयोजन किया। वह यज्ञ इतना अनोखा था कि एक हज़ार वर्ष में किसी राजा ने ऐसा यज्ञ नहीं करवाया था। इस यज्ञ में भाग लेने के लिए देश भर से कई महापंडितों और विद्वानों को आमंत्रित किया गया था। उसमें इन्द्रभूति, वायुभूति और अग्निभूति को भी उनके शिष्यों के साथ आने का निमंत्रण मिला था।

उसी समय उस नगरी के एक बगीचे में भगवान महावीर पधारे थे।

सुबह के समय नगर के लोगों ने आकाश को विमानों से ढका हुआ देखा। विमानों से सर्वश्रेष्ठ वस्त्र पहने हुए देवता उतर रहे थे।

इस प्रकार देवताओं को देखकर नगरवासी आपस में बातचीत करने लगे कि 'जहाँ इतना बड़ा यज्ञ हो रहा हो और जहाँ ऐसे विद्वान पंडित आए हों, वहाँ देवताओं का उपस्थित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। ये सभी देवता महापंडित सोमिलाचार्य के यज्ञ में शामिल होने आ रहे हैं।'

ये शब्द महापंडित इन्द्रभूति, वायुभूति और अग्निभूति के कानों में पड़े। और सभी गर्व महसूस करने लगे कि

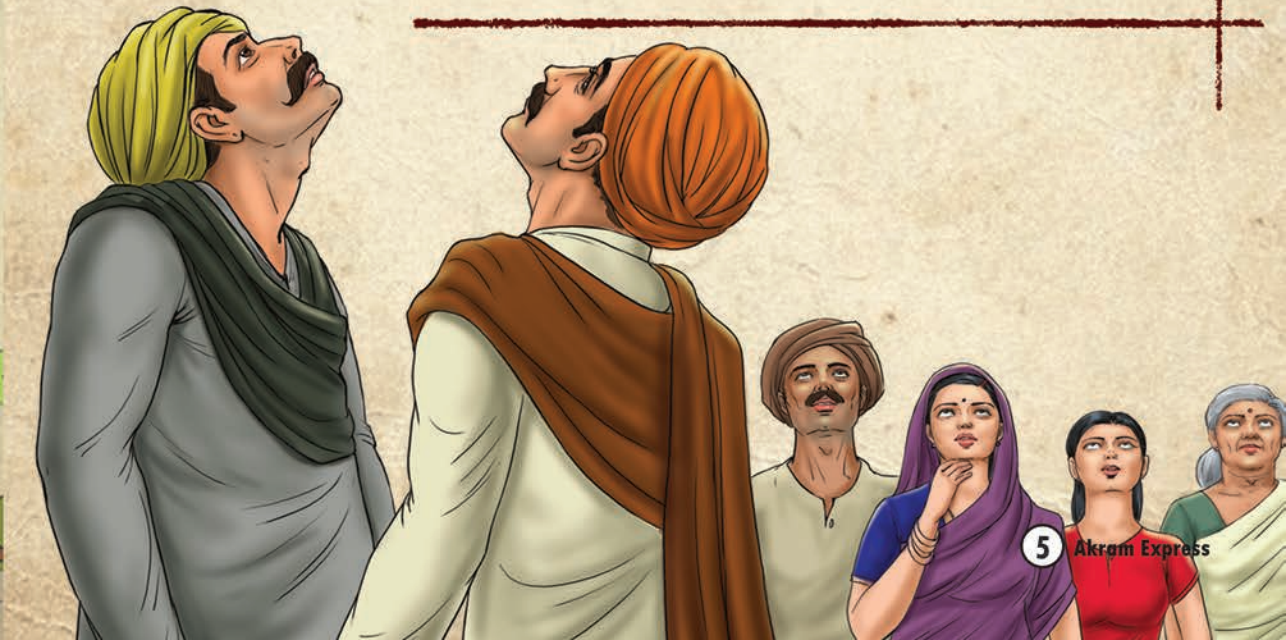

हमारा यज्ञ इतना प्रभावशाली है कि देवताओं को भी उपस्थित होना पड़ा!

लेकिन उनका ये गर्व ज्यादा देर तक टिक नहीं सका। देखते ही देखते देवताओं के विमान यज्ञ स्थल के प्रांगण में उतरने के बदले नगर के दूसरी ओर मुड़ गए। इन्द्रभूति और उसके भाईयों को बहुत आश्चर्य हुआ। 'यह क्या? क्या देवता यज्ञ से प्रसन्न होने के बजाय रूठकर दूसरी जगह चले गए? ऐसा क्यों हुआ होगा?'

जब पंडित सोमिलाचार्य और पंडित इन्द्रभूति गौतम इस विषय पर चर्चा कर रहे थे तब किसी जानकार ने बताया कि 'नगर की दूसरी दिशा में महावीर प्रभु पधारे हैं। वे भगवान हैं। महासेन नामक बगीचे में उनकी धर्मसभा की रचना की गई है और सभी देवता उसी धर्मसभा में जा रहे हैं।'

यह बात सुनकर पंडित इन्द्रभूति को आघात लगा। इन्द्रभूति मन ही मन ऐसा सोचते थे कि मेरे जैसा कोई महाज्ञानी है ही नहीं। इसलिए उन्होंने महावीर प्रभु को हराकर अपनी विद्या का जय जयकार करवाने का निश्चय किया।

जैसे ही इन्द्रभूति गौतम ने महावीर स्वामी की धर्मसभा में प्रवेश किया, महावीर स्वामी के रूप और उनके मुख पर अनोखा तेज देखकर कुछ क्षणों के लिए उन्हें अत्यंत अहोभाव का अनुभव हुआ। भगवान ने

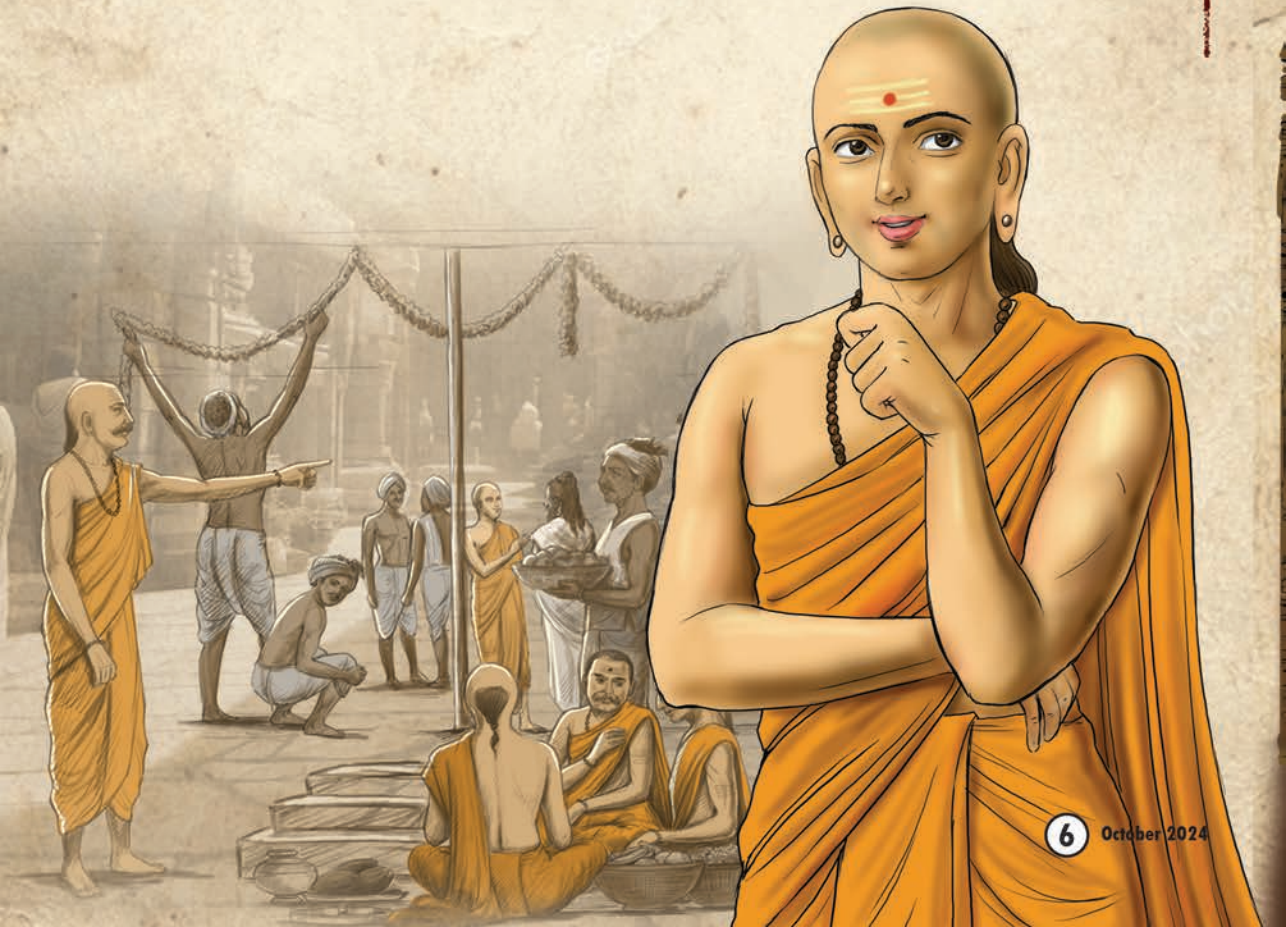

वात्सल्य भरी वाणी से इन्द्रभूति गौतम का स्वागत करते हुए कहा, 'इन्द्रभूति गौतम, पधारिए!'

एक क्षण के लिए इन्द्रभूति को लगा, 'इन्होंने मुझे मेरे नाम से बुलाकर मेरा स्वागत किया। क्या इन्हें सब कुछ पता चल जाता है?'

फिर अगले ही क्षण उन्होंने सोचा, 'इस संसार में मेरे अलावा दूसरा कोई महाज्ञानी कौन हो सकता है? मेरे जैसे प्रसिद्ध महापंडित का नाम कौन नहीं जानता! इसमें क्या आश्चर्य है कि इन्होंने मुझे मेरे नाम से बुलाया? मैं उन्हें सच्चा ज्ञानी तभी मानूँगा जब वे मेरे मन की शंकाओं को जानकर अपने ज्ञान से उसका समाधान करेंगे।'

जैसे ही इन्द्रभूति के मन में यह विचार आया, तुरंत ही भगवान महावीर ने उनके सभी प्रश्नों को जानकर उनका समाधान किया।

श्री इन्द्रभूति के संदेह के सारे बादल छंट गए। उनका अभिमान पूरी तरह से खत्म हो गया। उन्होंने अत्यंत भक्तिपूर्वक भगवान महावीर को नमस्कार किया और गद्‌गद स्वर में कहा, 'भगवंत, मुझे अपनी शरण में लें। मुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करें।'

महावीर स्वामी ने उसी समय इन्द्रभूति गौतम और उनके पाँच सौ शिष्यों को दीक्षा दी। और इस प्रकार, गौतम स्वामी महावीर प्रभु के प्रथम गणधर बने।

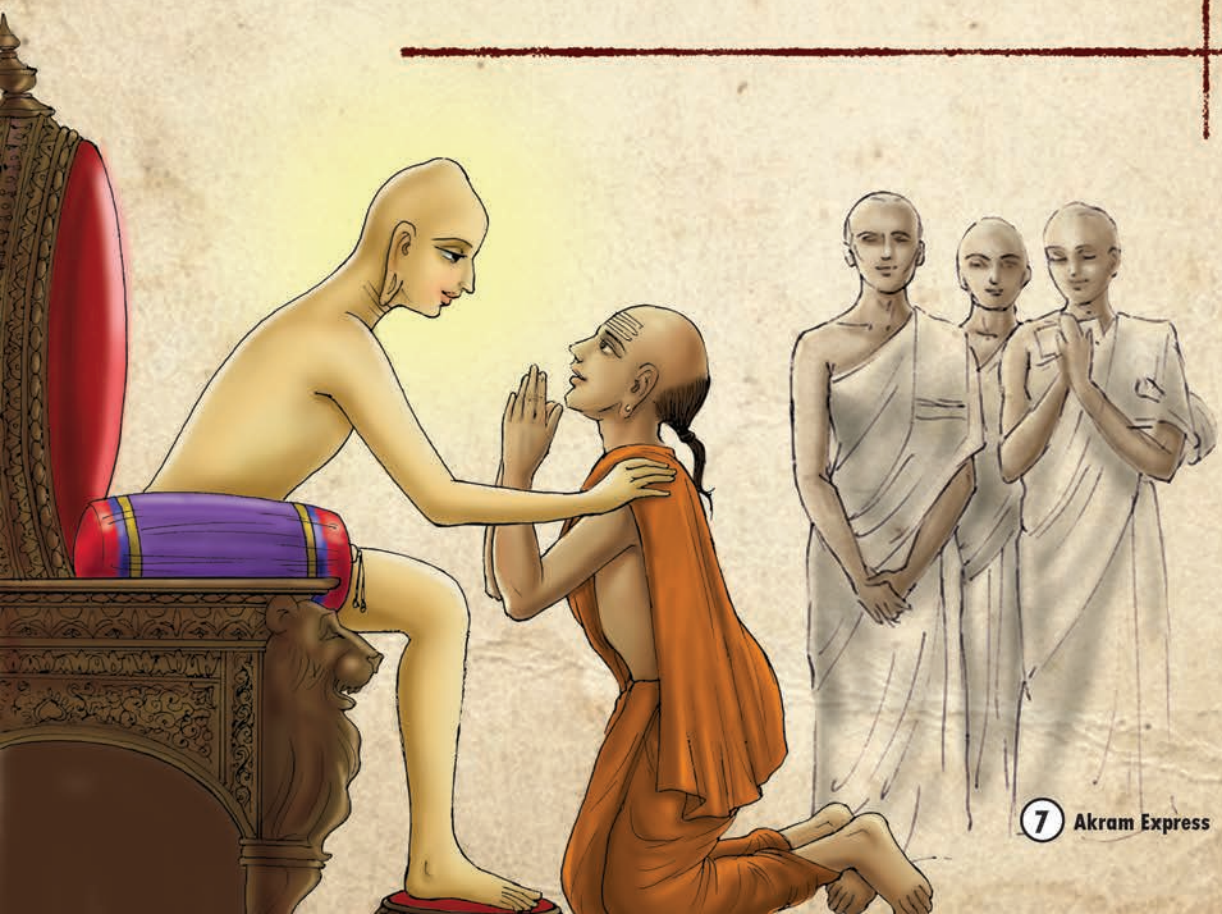

अहो, कैसी अद्भुत सरलता!

वाणिज्य ग्राम नामक एक विशाल नगर में आनंद नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसका व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था। आनंद की पत्नी का नाम शिवानंद था। पति-पत्नी दोनों धार्मिक थे। आनंद, नगर में बहुत लोकप्रिय था।।

एक बार भगवान महावीर वाणिज्य ग्राम के नजदीक पधारे। भगवान की देशना सुनने के लिए आनंद भी गया और पूरे भक्ति-भाव से भगवान की वाणी सुनी।

देशना समाप्त होने के बाद आनंद ने भगवान से संसार में रहकर धार्मिक नियमों का पालन करने की अनुमति ली।

आनंद ने घर आकर पत्नी को सारी बात बताई। पत्नी भी धार्मिक थी इसलिए दोनों साथ मिलकर सख्ती से व्रतों का पालन करने लगे।

बीस साल गुजर गए। आनंद की धर्मसाधना अधिक से अधिक उत्तम होती गई। एक दिन आनंद श्रावक ने अपने घर-परिवार का सारा भार अपने बड़े बेटे को सौंप दिया और अपना शेष जीवन बिताने के लिए एक धर्मशाला में जाकर रहने लगे। आनंद श्रावक ने साधु का वेष धारण नहीं किया था लेकिन उनकी

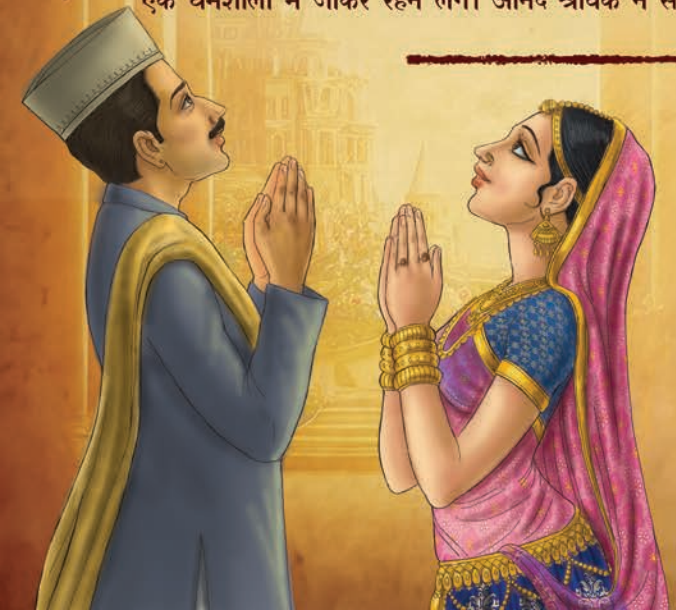

> अंत में, आनंद श्रावक ने गौतम स्वामी को भगवान महावीर से इस बात का खुलासा करने को कहा।

साधना अत्यंत उच्च कोटि की थी।

उस समय आनंद श्रावक ने आजीवन उपवास किया। आनंद श्रावक के अंतिम साधना की खबर पूरी नगरी में फैल गई। नगरवासी उनका हाल जानने धर्मशाला पहुँचने लगे।

उसी दौरान गौतम स्वामी ने दो उपवास किए थे। जब वे पारणा करने के लिए नगर में आए तो उन्होंने आनंद श्रावक के आजीवन उपवास की बात सुनी।

गौतम स्वामी के मन में विचार आया कि आनंद श्रावक तो महावीर प्रभु के परम भक्त हैं। उन्होंने इतना श्रेष्ठ तप किया है तो उनसे मिलकर उनका हाल जानना चाहिए। ऐसा सोचकर गौतम स्वामी आनंद श्रावक की धर्मशाला पहुँचे।

भगवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर, गुरु गौतम स्वामी को मिलने आया हुआ देखकर आनंद श्रावक की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

गुरु गौतम स्वामी को अपने पास बिठाकर आनंद श्रावक ने एक प्रश्न पूछा 'घर पर रहकर धर्म का पालन करने वाले श्रावक को एक विशेष प्रकार का ज्ञान हो सकता है या नहीं?' गौतम स्वामी ने कहा कि 'हाँ, संभव है।'

तब आनंद श्रावक बहुत ही प्रसन्न हुए और बताया कि उन्हें स्वयं को ऐसा ज्ञान हुआ है। और फिर उन्होंने स्वयं को प्राप्त हुए ज्ञान का वर्णन किया।

वर्णन सुनने के बाद गौतम स्वामी ने कहा कि आनंद श्रावक ने जैसा वर्णन किया है इस प्रकार का ज्ञान उन्हें होना असंभव है। उन्होंने आगे कहा कि आनंद श्रावक ने ऐसा कहकर गलती की है। इसलिए उन्हें इस गलती का प्रायश्चित करना चाहिए।

आनंद श्रावक ने अत्यंत नम्रता से पूछा, 'क्या सत्य का प्रायश्चित करना आवश्यक है? क्योंकि मैं कोई गलत बात नहीं कह रहा हूँ।' आनंद श्रावक और गौतम स्वामी के बीच इस बात को लेकर बहुत चर्चा हुई। अंत में, आनंद श्रावक ने गौतम स्वामी को भगवान महावीर से इस बात का खुलासा करने को कहा।

गौतम स्वामी एकदम सरल स्वभाव के थे। वे भगवान महावीर के पास गए और उन्हें सारी बात बताई। और भगवान से यह बताने की विनती की कि इस बात के लिए किसे प्रायश्चित करना चाहिए ।

भगवान महावीर ने गौतम स्वामी से कहा, 'आनंद ने जो कहा है वह सत्य है। तुम्हें अपनी बात का आग्रह नहीं रखना चाहिए। तुम्हें प्रायश्चित करना पड़ेगा। तुम उनके पास जाओ और अपनी गलती की क्षमा माँगो।'

यह पता चलते ही कि गलती उनकी खुद की है, गौतम स्वामी उसी समय आनंद श्रावक के पास जाने के लिए निकल पड़े और अपनी बात का प्रायश्चित करके उन्होंने आनंद श्रावक से क्षमा माँगी ली।

ऐसे महान ज्ञानी गुरु की विनम्रता और सरलता देखकर आनंद श्रावक गद्‌गद हो गए और उन्होंने हृदय से गौतम स्वामी को वंदन किया।

इस प्रकार गौतम स्वामी अपने दो दिवस के उपवास के पारणे की परवाह किये बिना आनंद श्रावक से क्षमा माँगने निकल पड़े थे। गौतम स्वामी की भगवान महावीर के प्रति ऐसी जबरदस्त अधीनता थी कि उन्होंने भगवान के कहने पर बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी गलती स्वीकार कर ली। और भगवान की आज्ञा अनुसार आनंद श्रावक से दिल से क्षमा माँग ली।

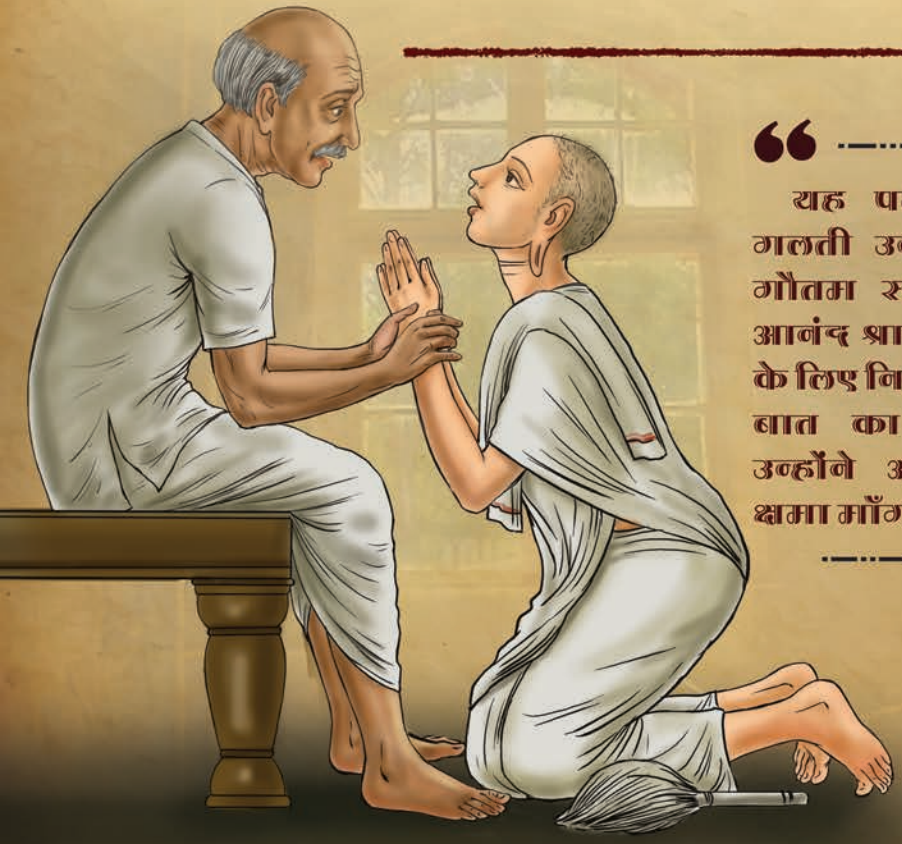

"यह पता चलते ही कि गलती उनकी खुद की है, गौतम स्वामी उसी समय आनंद श्रावक के पास जाने के लिए निकल पड़े और अपनी बात का प्रायश्चित करके उन्होंने आनंद श्रावक से क्षमा माँग ली।"

जाने कब होगा केवलज्ञान!

मेरे द्वारा बोध प्राप्त किए हुए आत्माओं को केवलज्ञान हो जाता है। लेकिन, मेरी दशा अभी भी वैसी की वैसी ही है। क्या मुझे इस जन्म में केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी?

एक दिन महावीर भगवान की देशना में,

जो साधक अपनी लब्धि के बल से अष्टापद पर्वत पर जाकर वहाँ स्थित भगवान की प्रतिमाओं की पूजा करके एक रात वहाँ रुकता है वह मोक्ष का अधिकारी बनता है।

प्रभु, मैं इसी भव में मोक्ष जाना चाहता हूँ। क्या आप मुझे अष्टापद जाने की अनुमति देंगे?

यह बात सुनकर गौतम स्वामी महावीर प्रभु के पास गए,

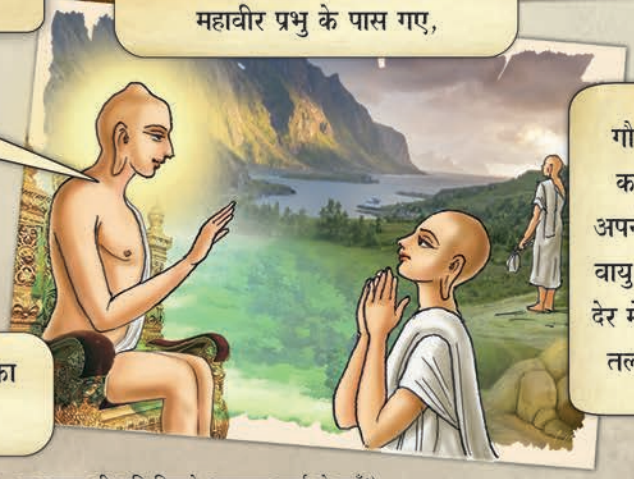

गौतम, आप अवश्य अष्टापद पर्वत पर जा सकते हो।

गौतम स्वामी के पास कई लब्धियाँ थीं। वे अपनी लब्धि के बल पर वायु की गति से कुछ ही देर में अष्टापद पर्वत की तलहटी में पहुँच गए।

गौतम स्वामी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

(लब्धि - एक प्रकार की प्राप्ति जिससे असामान्य कार्य हो पाएँ।)

उसी समय तीन तपस्वी अपने पाँच सौ-पाँच सौ शिष्यों के साथ मोक्षपद की प्राप्ति के लिए अष्टापद पर्वत चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने गौतम स्वामी को वहाँ देखा,

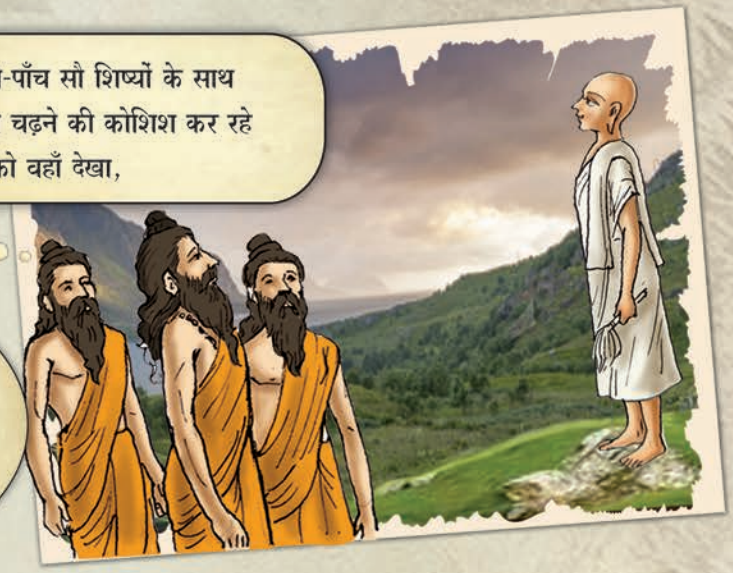

हम महातपस्वी और शरीर से दुबले-पतले होने पर भी इस पर्वत पर नहीं चढ़ पा रहे हैं। तो वे इतने बड़े शरीर वाले ऊपर कैसे चढ़ पाएँगे?

तभी गौतम स्वामी सूर्यकिरणों का आधार लेकर तेजी से पर्वत के ऊपर चढ़ गए और अदृश्य हो गए।

इस महापुरुष के पास ज़रूर कोई महाशक्ति होगी। यदि वे वापसी में मिलेंगे तो हम उनके शिष्य बन जाएँगे।

दूसरे दिन गौतम स्वामी को देखकर तपस्वी खुश हो गए।

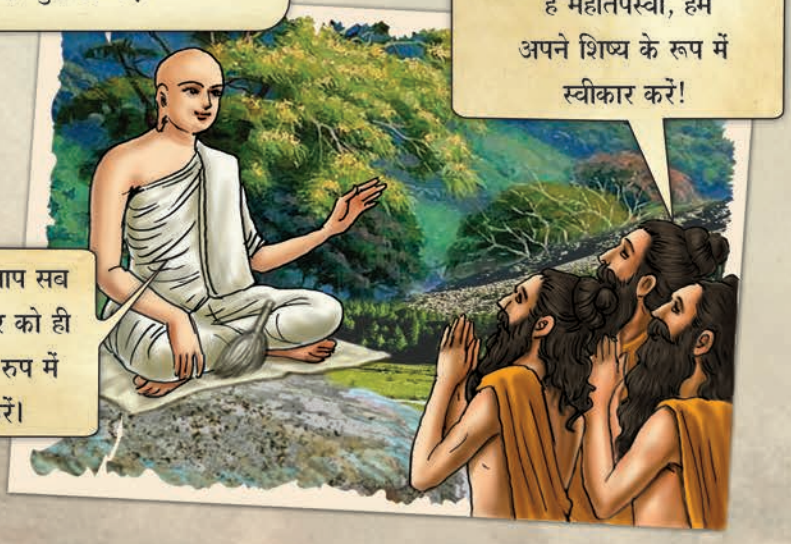

हे महातपस्वी, हमें अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करें!

हे तपस्वियों, आप सब भगवान महावीर को ही अपने गुरु के रुप में स्वीकार करें।

क्या आपके भी कोई गुरु हैं? तो फिर वे कितने महान होंगे! लेकिन अभी तो आप ही हमें दीक्षा दीजिए।

गौतम स्वामी ने तीन तपस्वियों और उनके पंद्रह सौ शिष्यों को भगवान महावीर के शासन की दीक्षा दी। उसके बाद, सभी भगवान के पास जाने के लिए रवाना हुए।

वापस लौटते समय गौतम स्वामी ने तपस्वियों को भोजन करने बिठाया। गौतम स्वामी ने एक छोटी कटोरी में खीर भरी।

इतने छोटे पात्र में भरी हुई खीर हम सब के लिए कैसे पर्याप्त होगी?!

लेकिन गौतम स्वामी के पास एक ऐसी लब्धि थी कि जिस चीज़ को वे अपने अँगूठे से छू लेते वह चीज़ अक्षय हो जाती थी! और इस तरह, अपनी लब्धि से गौतम स्वामी ने सभी तपस्वियों को पेट भरकर खीर खिलाई।

वापस लौटते समय पंद्रह सौ तीन तपस्वियों को केवलज्ञान हो गया। गौतम स्वामी को इस बात की जानकारी नहीं थी।

भगवान महावीर के समवशरण में पहुँचकर,

हे तपस्वियों, प्रभु को वंदन करो।

हे गौतम, केवलज्ञानियों से इस प्रकार बात नहीं करनी चाहिए। उनसे क्षमा माँगो।

गौतम स्वामी ने तुरंत ही केवलज्ञानियों से क्षमा माँगी।

इन सभी को केवलज्ञान हो गया? क्या मेरी अष्टापद पर्वत की यात्रा व्यर्थ साबित होगी? मुझे केवलज्ञान कब होगा?

दिव्य दिवाली

भगवान महावीर का आयुष्य पूर्ण होने वाला था और गौतम स्वामी के केवलज्ञान का समय भी निकट आ गया था। भगवान को लगा, गौतम का मेरे प्रति प्रशस्त राग ही उसे केवलज्ञान होने से रोक रहा है। जब तक यह प्रशस्त राग नहीं टूटेगा तब तक केवलज्ञान नहीं होगा।

इस प्रशस्त राग को तोड़ने के लिए महावीर प्रभु ने गणधर गौतम स्वामी को आज्ञा दी, 'हे गौतम, यहाँ से नजदीक ही एक गाँव में देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता है। आप उन्हें बोध देने के लिए वहाँ जाओ। ऐसा करने से आपका भी उद्धार होगा।'

महावीर प्रभु की आज्ञा गौतम स्वामी को प्राणों से भी अधिक प्रिय थी। वे आज्ञा पाने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। गौतम स्वामी ने तुरंत ही देवशर्मा को बोध देने के लिए उनके गाँव की ओर विहार किया। देवशर्मा को बोध देकर गौतम स्वामी को तुरंत ही भगवान के पास वापस पहुँच जाना था। प्रभु से दूर रहना उनके लिए बहुत कठिन था। देवशर्मा के पास जाकर गौतम स्वामी ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। भगवान की आज्ञा पालन करने की खुशी और संतुष्टि के साथ गौतम स्वामी तुरंत ही प्रभु के पास जाने के लिए वापस निकल पड़े।

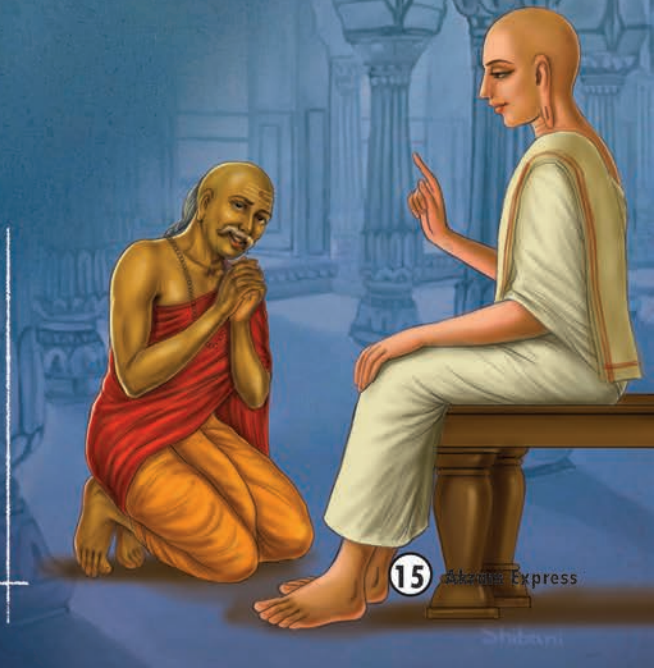

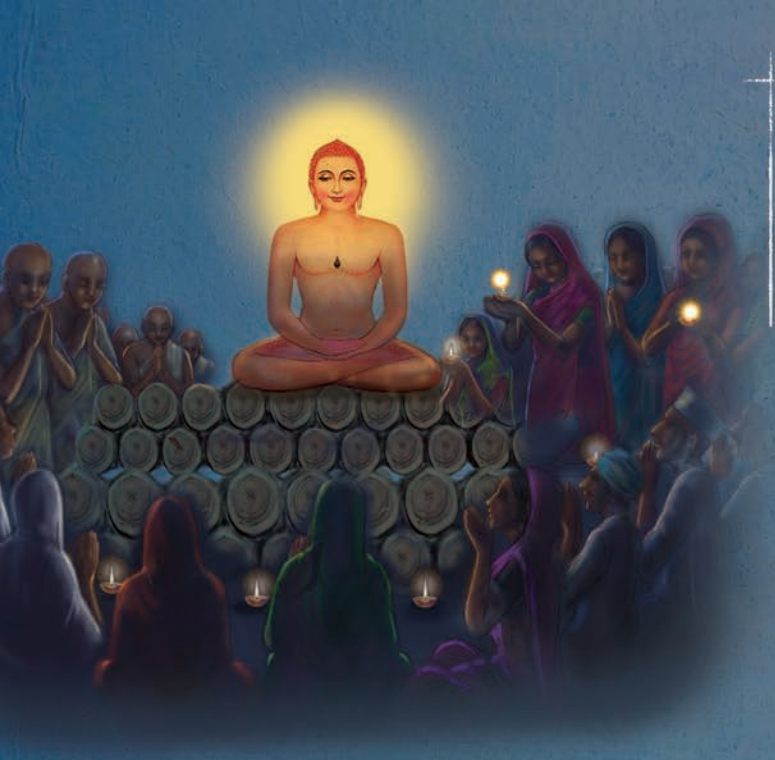

दूसरी ओर, उसी समय मध्यरात्रि को वह क्षण आ गया जब भगवान महावीर का आयुष्य समाप्त हुआ और वे निर्वाण पाकर मोक्ष गए। पावापुरी की धरती उस दिन पावन हो गई। लोगों ने दीपक जलाकर भगवान के निर्वाण का उत्सव मनाया। भगवान के पास वापस लौट रहे गौतम स्वामी को जब इस बात का पता चला तो उनका हृदय आहत हो गया और उनकी वेदना का पार नहीं रहा। उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

'भगवान ने मुझे अपने से दूर क्यों किया? प्रभु मुझे छोड़कर क्यों चले गए?' अब मुझे केवलज्ञान कैसे होगा? ऐसा सोचकर वे शोक में डूब गए। अचानक उन्हें भगवान के कहे हुए शब्द याद आए और लगा कि 'मुझे अभी तक केवलज्ञान नहीं हुआ इसमें भगवान का क्या दोष? इसमें मेरी अपनी ही कोई गलती होनी चाहिए।' बहुत सोचने के बाद उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ। गलती की परतें टूटीं और उन्हें केवलज्ञान प्रकट हुआ।

इस प्रकार, जिस दिन भगवान महावीर का निर्वाण हुआ उसी दिन गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्रकट हुआ। उस पावन दिन को हम दीप जालकर 'दिवाली' के रूप में मनाते हैं।

चलो खेलें...

नीचे दी गई चाबियों में से कौन सी चाबी से दरवाजा खुलेगा यह पता लगाएँ।

AALOO CHILLY

चिली ने तो आपके साथ बहुत सारी बातें की। अब, मैं आपको कुछ बातें बताता हूँ। याद है न, चिली को पार्सली का सोंग सुनकर चक्कर आ गए थे? मुझे नहीं पता ऐसा क्यों हुआ? मैं तो प्रैक्टिस के लिए चिली को सुबह बुलाने गया था। और पार्सली गा रहा था...

सच कहूँ तो मुझे उसकी कविता बिल्कुल समझ में नहीं आई थी। क्योंकि पार्सली बहुत ही बुरा गाता है। ऐसा लगता है कि वह मुँह में कागज भरकर गा रहा है। लेकिन उसे बुरा न लगे इसलिए मैंने उसकी कविता पर थोड़ा डान्स किया।

पार्सली ने गाना बंद किया और मैंने चिली की ओर देखकर 'हाइ' किया। लेकिन चिली तो इतना लाल था कि मुझे लगा शायद उसने आज चिली शेक में ज्यादा चिली डाल दी होगी।

मैंने उसे एक बड़ी सी स्माइल दी लेकिन वह मुझसे कुछ बोले बिना ही सीधा घर के बाहर चला गया। शायद वह पार्सली की सिंगिग को ज्यादा सहन नहीं कर पाता था।

मैं भी उसके पीछे दौड़ा। मैंने उससे पूछा, 'चिली, मैं कितने दिनों से इंतज़ार कर रहा हूँ कि हम मिलकर तुम्हारे सिंगिंग की प्रैक्टिस करेंगे। मैंने कितने दिनों से तुम्हारे सोंग सुने ही नहीं हैं!'

पता नहीं क्यों, चिली कुछ बोला ही नहीं। कई बार वह रियाज़ के विचारों में खो जाता है, लेकिन चिली कभी भी इतने लंबे टाइम तक कुछ भी बोले बिना रहा ही नहीं है। फिर मैंने उससे पूछ ही लिया, 'चिली, तुम टेन्शन में हो क्या?'

चिली ने बहुत गुस्से से मेरी तरफ देखा और कहा।

चिली ने मुझे डरपोक कहा! चिली ने कभी भी मुझसे इस तरह बात नहीं की थी। पता नहीं उसे क्या हुआ था। फिर उसने मुझसे पूछा कि 'तुमने पार्सली के सोंग पर डान्स क्यों किया?'

पार्सली के सोंग पर डान्स करने से चिली को क्यों बुरा लगा? मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था।

क्या आलु को पता चलेगा कि पार्सली के सोंग के शब्दों से चिली को दुःख हुआ था? इतनी छोटी सी बात के लिए चिली क्यों चिढ़ गया? क्या आलु-चिली के बीच का झगड़ा खत्म होगा या फिर...

Akram Express

October 2024
Year : 12, Issue : 07
Conti. Issue No.: 139

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

परम पूज्य दादा भगवान के ११७ वें जन्मजयंती महोत्सव में पधारने के लिए सभी को भाव भरा आमंत्रण...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशिप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशिप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral-Pratappura Road, At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.